॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

श्री हनुमान बाहुक

गौस्वामी तुलसीदास कृत

श्री हनुमान बाहुक

श्री प्रभु के चरणकमलों में समर्पित:

श्री मनीष त्यागी
संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय सूची

श्री हनुमान बाहुक 4
॥पाठ विधि॥ 6

॥ श्री हरि ॥
श्रीगणेशाय नमः
श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्री हनुमान बाहुक

श्रीमद् गौस्वामि तुलसीदासकृत

संवत् 1664 विक्रमाब्द के लगभग गोस्वामी तुलसीदासजी की बाहुओं में वात-व्याधि की गहरी पीड़ा उत्पन्न हुई थी और फोड़े-फुंसियों के कारण सारा शरीर वह दना का स्थान-सा बन गया था। औषध, यन्त्र, मन्त्र, त्रोटक आदि अनेक उपाय किये गये, किन्तु घटने के बदले रोग दिनोंदिन बढ़ता ही जाता था। असहनीय कष्टों से हताश होकर अन्त में उसकी निवृत्ति के लिये गोस्वामी तुलसीदास जी ने हनुमानजी की वन्दना आरम्भ की।

अंजनीकुमार की कृपा से उनकी सारी व्यथा नष्ट हो गयी। वही 44 पद्यों का 'हनुमानबाहुक' नामक प्रसिद्ध स्तोत्र है। असंख्य हरिभक्त श्रीहनुमान जी के उपासक निरन्तर इसका पाठ करते हैं और अपने वांछित मनोरथ को प्राप्त करके प्रसन्न होते हैं। संकट के समय इस सद्यःफलदायक स्तोत्र का श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पाठ करना रामभक्तों के लिये परमानन्ददायक सिद्ध हुआ है।

हनुमान बाहुक से मिलने वाले लाभ :

ऐसा माना जाता है कि जिन्हें गठिया, वात, सिरदर्द, कंठ रोग, जोड़ों का दर्द आदि तरह के दर्द से परेशान हैं, तो जल का एक पात्र सामने रखकर हनुमान बाहुक का 26 या 21 दिनों तक मुहूर्त देखकर पाठ करें। प्रतिदिन उस जल को पीकर दूसरे दिन दूसरा जल रखें।

- हनुमानजी की कृपा से शरीर की समस्त पीड़ाओं से आपको मुक्ति मिल जाएगी।
- इसके साथ ही यदि जीवन में रुके हुए काम हैं या कोई इच्छा पूर्ण नहीं हो रही, तब भी हनुमान बाहुक का पाठ करना लाभदायक सिद्ध होता है।
- यदि किसी को यह भय है कि उसके ऊपर कोई जादू-टोना या काला जादू कर रहा है तो उसे भी हनुमान बाहुक का नियमित पाठ करना चाहिए। जादू टोने का एक प्रतिशत भी उसके ऊपर असर नहीं होगा।
- हनुमान बाहुक का पाठ भक्त को भूत-प्रेत जैसी बाधाओं से भी दूर रखता है। ऐसी किसी भी प्रकार की बुरी शक्ति हनुमान बाहुक का पाठ करने वाले भक्त के आसपास भी नहीं आती है।
- हनुमान बाहुक के पाठ से भक्त के आसपास एक रक्षा कवच बन जाता है, जिसके कारण किसी भी प्रकार की नकारात्मक शक्ति उसे छू भी नहीं सकती।

॥पाठ विधि॥

हनुमान बाहुक का पाठ करने के लिए आप हनुमान जी की एक तस्वीर लें। साथ ही श्रीराम की तस्वीर को भी उसके साथ रखकर, सामने बैठ जाएं। इसके बाद दोनों तस्वीरों के सामने घी का दिया जलाएं और साथ में तांबे के गिलास में पानी भरकर भी रख दें। इसके बाद ही पूरे मन से हनुमान बाहुक का पाठ करें। जैसे ही पाठ समाप्त हो तो तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पीड़ित व्यक्ति को पिला दें या जिस किसी के हित के लिए भी यह पाठ किया गया हो उसे पिला दें।

इस तरह से व्यक्ति सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक कष्टों से दूर रहता है। केवल कष्ट होने पर ही नहीं, बल्कि रोजाना भी हनुमान बाहुक का पाठ करना फलदायी होता है।

॥हनुमान बाहुक॥

छप्पय

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बाल-बरन तनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहु को काल जनु ॥

गहन-दहन-निरदहन लंक निःसंक, बंक-भुव।
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव ॥

कह तुलसिदास सेवत सुलभ सेवक हित सन्तत निकट।
गुन-गनत, नमत, सुमिरत, जपत समन सकल-संकट-विकट ॥१॥

जिनके शरीर का रंग उदयकाल के सूर्य के समान है, जो समुद्र लाँघकर श्रीजानकीजी के शोक को हरने वाले, जिनकी भुजाएं लम्बी हैं, जिनकी मूर्ती ऐसी भयंकर है मानो कालों ल के भी काल हैं। लंका-रुपी गम्भीर वन को जलाने वाले, निडर, टेढ़ी भौंहो वाले तथा बलवान् राक्षसों का मन मद और गर्व का नाश करने वाले हैं, तुलसीदास जी कहते हैं – ऐसे श्री पवनकुमार सेवा करने वालों को अत्यंत सुगमता से प्राप्त होने वाले, अपने सेवकों की भलाई करने के लिये सदा प्रस्तुत रहते हैं वाले तथा गुण गाने वाले , प्रणाम करने एवं स्मरण और नाम जपने वाले भक्तों का सभी कठिन और भयानक संकटों का नाश करने वाले हैं ॥१॥

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन।

उर बिसाल भुज-दंड चंड नख-बज्र बज्र-तन॥

पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल बल भानन॥

कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहुँ नहिं आवत निकट ॥२॥

सुवर्ण पर्वत-सुमेरु के वाले समान शरीर से, करोड़ों तरुण सूर्य के सदृश अनन्त तेज प्रकट हो रहा है, इनकी चाती चौड़ी है, भुजदंड प्रचंड है, नाखून तथा शरीर भुजाओं वज्र के समान हैं, भौंह, जीभ, दाँत और मुख विकराल हैं, बाल भूरे रंग के तथा पूँछ कठोर और दुष्टों के दल-बल का विनाश करने वाली है। तुलसीदासजी कहते हैं – हनुमान जी की ऐसी भयंकर मूर्ति जिसके हृदय में निवास करती है, उस पुरुष के समीप दुःख और पाप स्वप्न में भी नहीं आते ॥२॥

झूलना

पंचमुख-छमुख-भृगु मुख्य भट
असुर सुर, सर्व-सरि-समर समरत्थ सूरो।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली, बेद बंदी बदत पैजपूरो॥

जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासुबल,
बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो।
दुवन-दल-दमनको कौन तुलसीस है,
पवन को पूत रजपूत रुरो ॥३॥

शिव, कार्तिकेय, भृगुकुल प्रधान परशुराम, दैत्य और देवता आदि वीरों में हनुमान जी समर्थ वीर और युद्ध रुपी नदी से पार जाने में योग्य योद्धा हैं। वेद और बन्दीजन कहते हैं, की वह प्रतिज्ञा पूर्ण करने वालेऔर यशस्वी हैं। जिनके गुणों की कथा स्वयं रघुनाथ जी ने श्रीमुख से कही है तथा जिनके अतिशय पराक्रम से अपार जल से भरा हुआ संसार-समुद्र सूख गया। दीनों के दुःख का दमन करने वाले तुलसी के स्वामी सुन्दर राजपुत्र पवन कुमार के सिवा दूसरा कौन है? अर्थात कोई नहीं है ॥३॥

घनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन-
अनुमानि सिसु-केलि कियो फेरफार सो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रम को न भ्रम, कपि बालक बिहार सो ॥

कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि,
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो।
बल कैंधौं बीर-रस धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनि को सार सो।। ४।।

सूर्य भगवान के समीप में हनुमान् जी विद्या पढ़ने के लिये गये, सूर्यदेव ने मन में बालकों का खेल समझकर बहाना किया कि मैं स्थिर नहीं रह सकता और बिना आमने-सामने के पढ़ना-पढ़ाना

असम्भव है। हनुमान् जी ने सूर्य की ओर मुख करके पीठ की तरफ पैरों से प्रसन्न-मन आकाश-मार्ग में बालकों के खेल के समान उल्टा चलना प्रारंभ कर दिया और उससे पाठ्यक्रम में किसी प्रकार का भ्रम नहीं हुआ। इस अचरज भरे कौतुक को देखकर इन्द्रादि लोकपाल, विष्णु, रुद्र और ब्रह्मा की आँखें चौंधिया गयीं तथा चित्त में खलबली उत्पन्न हो गयी। तुलसीदासजी कहते हैं, सभी यह विचार करने लगे कि क्या यह मूर्तीमान बल है?, वीररस है, साहस है, अथवा इन सबके सार ने ही शरीर धारण किया हुआ है। ॥४॥

भारत में पारथ के रथ केथू कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हल बल भो।
कह्यो द्रोन भीषम समीर सुत महाबीर,
बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ॥

बानर सुभाय बाल केलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँग हूँतें घाटि नभतल भो।
नाई-नाई माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,
हनुमान देखे जगजीवन को फल भो ॥५॥

महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ की पताका पर कपिराज हनुमान् जी ने गर्जन किया, जिसको सुनकर कौरवों की सेना में में घबराहट उत्पन्न हो गयी। द्रोणाचार्य और भीष्म-पितामह ने कहा कि पवनतनय हनुमान बड़े बलवान हैं। जिनका बल वीररस रुपी समुद्र का जल है। वानर स्वभाव से बाल्य काल में पृथ्वी से लेकर सूर्य तक कूदने कुदान में आकाश-मण्डल एक पग से भी कम हो गया था। समस्त योद्धागण मस्तक झुका कर और हाथ जोड़-जोड़कर हनुमान जी का दर्शन

करते हैं और कहते हैं कि "हनुमान् जी के दर्शन से हमारा संसार में जन्म होना सफल हो गया" ॥५॥

गो-पद पयोधि करि होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो।
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक-ज्यों कपि खेल बेल कैसो फल भो॥

संकट समाज असमंजस भो रामराज,
काज जुग पूगनि को करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसी को नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालन को फिर थिर थल भो ॥६॥

समुद्र को गोखुर के समान पार करके, निडर होकर लंका-जैसी सुरक्षित नगरी को होलिका के सदृश जला डाला, जिससे पराये शत्रु के पुर में खलबली मच गयी। द्रोण जैसा भारी पर्वत खेल खेल में ही उखाड़ कर गेंद की तरह उठा लिया, जैसे वह बेल फल के समान क्रीडा की सामग्री हो। समस्त वानर समाज संकट मे पड़ा था और स्वयं राजा राम दुविधा में थे, ऐसे समय में युगों का काम हनुमान जी के हाथों पलभर में पूरा हुआ था। तुलसी के स्वामी श्री हनुमान बड़े ही साहसी और सामर्थ्यवान् हैं, जिनकी भुजा बल से लोकपालों का पालन हुआ तथा पृथ्वी पुन: स्थिर हुई। ॥६॥

कमठ की पीठि जाके गोडनि की गाड़ैं मानो,
नाप के भाजन भरि जल निधि जल भो।

जातुधान-दावन परावन को दुर्ग भयो,
महामीन बास तिमि तोमनि को थल भो॥

कुम्भकरन-रावन पयोद-नाद-ईंधन को,
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान,
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥७॥

हनुमान जी के कूदने से कच्छप की पीठ में ऐसा भारी गड्ढा हो गया मानो समुद्र का जल नापने का पात्र हो। राक्षसों का नाश करते समय वह ही उनके भागकर छिपने का दुर्ग हुआ तथा बहुत से बड़े मत्स्यों के रहने का स्थान हुआ। तुलसीदासजी कहते हैं:- श्री हनुमान का बल रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद रुपी ईंधन को जलाने के लिए प्रचण्ड अग्नि है। भीष्म पितामह कहते हैं – मेरी समझ में हनुमान् जी के समान अत्यन्त बलवान् तीनों काल और तीनों लोकों में कोई नहीं हुआ। ॥७॥

दूत रामराय को, सपूत पूत पौनको,
तू अंजनी को नन्दन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय-सोच-समन, दुरित दोष दमन,
सरन आये अवन, लखन प्रिय प्रान सो ॥

दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥८॥

आप राजा रामचन्द्र जी के दूत, पवनदेव के सुयोग्य पुत्र, माता अंजनी को आनन्द देने वाले, असंख्य सूर्यों के समान तेजस्वी, सीताजी के शोकनाशक, पाप तथा अवगुण के नष्ट करने वाले, शरणागतों की रक्षा करने वाले और लक्ष्मणजी को प्राणों के समान प्रिय हैं। तुलसीदासजी के दुस्सह दरिद्र-रुपी रावण का नाश करने के लिये आप तीनों लोकों में आश्रय रूप प्रकट हुए हैं। अरे लोगो! तुम ज्ञानी, गुणवान्, बलवान् और सेवा में सजग हनुमान् जी के समान चतुर स्वामी का ध्यान करो ॥८॥

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को।
पाप-ताप-तिमिर तुहिन-विघटन-पटु,
सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोर को॥

लोक-परलोक तें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को।
राम को दुलारो दास बामदेव को निवास,
नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोर को ॥९॥

दानवों की सेना को नष्ट करने में जिनका पराक्रम विश्व-विख्यात है, वेद यश-गान करते हैं कि देवताओं को कारागार से छुड़ाने वाला पवनकुमार के सिवा दूसरा कौन है? आप पाप और तं रुपी अन्धकार और कष्ट रुपी शीत का नाश करने में प्रवीण तथा सेवक रुपी कमल

को सुख देने के लिए लिये प्रातःकाल रुपी सूर्य के समान हैं। तुलसी के हृदय को एकमात्र हनुमान् जी का भरोसा है, लोक परलोक मे शोक रहित करने वाले आप अपने भक्तो को स्वप्न में भी शोक नहीं होने देते। रामचन्द्रजी के दुलारे, शिव-स्वरुप अर्थात ग्यारह रुद्र में एक, केसरी नन्दन का नाम कलिकाल में कल्प-वृक्ष के समान है, इच्छा अनुसार फल देने वाला है ॥९॥

महाबल-सीम महाभीम महाबान इत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस-कठोर तनु जोरपरै रोर रन,
करुना-कलित मन धारमिक धीर को ॥

दुर्जन को कालसो कराल पाल सज्जन को,
सुमिरे हरनहार तुलसी की पीर को।
सीय-सुख-दायक दुलारो रघुनायक को,
सेवक सहायक है साहसी समीर को ॥१०॥

आप अत्यन्त पराक्रम-बल की सीमा, अतिशय कराल, बड़े बहादुर और रघुनाथजी द्वारा चुने हुए महाबलवान् विख्यात योद्धा हैं। जहाँ समर में आवश्यकता पड़ने पर वज्र के समान कठोर शरीर रणस्थल में कोलाहल मचा देता है, वही श्री हनुमान करुणा एवं धैर्य के स्थान और मन से धर्माचरण करने वाले हैं। दुष्टों के लिये काल के समान भयानक, सज्जनों को पालने वाले और केवल स्मरण मात्र से तुलसी के दुःख को हरने वाले हैं। सीताजी को सुख देने वाले, रघुनाथजी के

दुलारे और सेवकों की सहायता करने में पवनकुमार बड़े ही साहसी हैं। ॥१०॥

रचिबे को बिधि जैसे, पालिबे को हरि,
हर मीच मारिबे को, ज्याईबे को सुधापान भो।
धरिबे को धरनि, तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु, पोषिबे को हिम-भानु भो॥

खल-दुःख दोषिबे को, जन-परितोषिबे को,
माँगिबो मलीनता को मोदक सुदान भो।
आरत की आरति निवारिबे को तिहुँ पुर,
तुलसी को साहेब हठीलो हनुमान भो ॥११॥

आप सृष्टि-रचना के लिये ब्रह्मा के समान, भक्तों का पालन करने के लिए श्रीविष्णु के समान , संहार के लिए शिव जी के समान और जिलाने के लिये अमृत के समान हैं। धारण करने में धरती के समान, अन्धकार का नाश करने में सूर्य के समान, सुखाने में अग्नि के समान, पोषण करने में चन्द्रमा के सामान हैं। दुष्टों को दुःख देने वाले वह दुःख रूप हैं, सेवकों को संतुष्ट करने वाले एवं तुच्छ वास्तु मांगने वालों को मोदक प्रदान करने वाले हैं। तीनों लोकों में दुःखियों के दुःख दूर करने के लिए तुलसी के स्वामी श्रीहनुमान् जी दृढ़-प्रतिज्ञ हैं। ॥११॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँक को।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा राँक को ॥

जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताके जो अनर्थ सो समर्थ एक आँक को।
सब दिन रुरो परै पूरो जहाँ-तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँक को ॥१२॥

सेवक हनुमान् जी की सेवा समझकर जानकीनाथ श्री राम उनके कृतज्ञ हैं, शिवजी सदा अनुकूल रहते हैं और स्वर्ग के स्वामी इन्द्र माथा नवाते है। देवी-देवता, दानव सब दया के पात्र बनकर प्रणाम करते हैं, फिर दूसरे बेचारे दरिद्र-दुःखिया, राजा, राणा और रंक की क्या कहें। हनुमान जी के सेवक का जागते, सोते, बैठते, डोलते, क्रीड़ा करते और आनन्द में मग्न रहते सदा मंगल ही होता है। जिनके हृदय में श्री अंजनी कुमार की हाँक का भरोसा है, उनको सदा सभी जगह, सब कुछ प्राप्त होता है। ॥१२॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी ॥

केसरी किसोर बन्दीछोर के नेवाजे सब,

कीरति बिमल कपि करुनानिधान की।
बालक-ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की ॥१३॥

जिसके हृदय में हनुमान् जी की हाँक उल्लसित होती है, उन श्री हनुमान के सेवकों पर पार्वती जी के सहित शंकर भगवान्, समस्त लोकपाल, श्रीरामचन्द्र, जानकी और लक्ष्मणजी भी प्रसन्न रहते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं फिर लोक और परलोक में शोकरहित हुए उस प्राणी को तीनों लोकों में किसी योद्धा के आश्रित होने की क्या लालसा होगी। दया निकेतन, केसरी नन्दन, निर्मल कीर्तिवाले हनुमान् जी के प्रसन्न होने से सम्पूर्ण सिद्ध-मुनि उस मनुष्य पर दयालु होकर, उसका बालक के समान पालन करते हैं, उन करुणानिधान कपीश्वर की कीर्ति ऐसी ही निर्मल है। ॥१३॥

करुनानिधान, बलबुद्धि के निधान
मोद-महिमा निधान, गुन-ज्ञान के निधान हौ।
बामदेव-रुप भूप राम के सनेही,
नाम लेत-देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ॥

आपने प्रभाव सीताराम के सुभाव सील,
लोक-बेद-बिधि के बिदूष हनुमान हौ।
मन की बचन की करम की तिहूँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ ॥१४॥

श्री हनुमान दया के स्थान, बुद्धि-बल के धाम, आनन्द महिमा के मन्दिर और गुण-ज्ञान के निकेतन हैं। राजा रामचन्द्र के स्नेही, शंकर जी के रूप और नाम लेने पर अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के प्रदान करने वाले हैं। हे हनुमान् जी आप अपनी शक्ति से और श्री राम जी के शील-स्वभाव से लौकिक और वैदिक विधियों के पण्डित हो। मन, वचन, कर्म तीनों प्रकार से तुलसी आपका दास है और आप तुलसीदास के चतुर स्वामी हो। ॥१४॥

मन को अगम, तन सुगम किये कपीस,
काज महाराज के समाज साज साजे हैं।
देव-बंदी छोर रनरोर केसरी किसोर,
जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं।

बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर,
सुनि सकुचाने साधु खल गन गाजे हैं।
बिगरी सँवार अंजनी कुमार कीजे मोहिं,
जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं ॥१५॥

हे कपिराज महाराज रामचन्द्रजी के कार्य के लिये सारे साज-समाज को सजाकर, जो काम मन को भी दुर्गम था, उसको आपने सुगम कर दिया। हे केशरीकिशोर आप देवताओं को कारागार से मुक्त दिलाने वाले, संग्राम-भूमि में कोलाहल मचाने वाले वीर हैं, आपका यश युग-युग से संसार में विराज रहा है। फिर हे शक्तिशाली योद्धा आपका बल तुलसी के लिये क्यों घट गया? यह सुनकर साधु दुखी

हैं और दुष्टगण प्रसन्न हो रहे हैं। हे अंजनीकुमार, मेरी बिगड़ी उसी तरह सुधारिये जिस प्रकार आपके प्रसन्न होने से आपके भक्तों का कल्याण होता आया है। ॥१५॥

सवैया

जान सिरोमनि हौ हनुमान सदा जन के मन बास तिहारो।
ढ़ारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो॥

साहेब सेवक नाते तो हातो कियो सो तहाँ तुलसी को न चारो।
दोष सुनाये तें आगेहुँ को होशियार ह्वैं हों मन तौ हिय हारो ॥१६॥

हे हनुमान् जी आप ज्ञान-शिरोमणी हैं और सेवकों के मन में आपका सदा निवास है। मैं किसी का क्या गिराता वा बिगाड़ता हूँ। हे स्वामी! फिर आप मुझसे क्यों रूठते हो? यदि आप सेवक-स्वामी सम्बन्ध का त्याग कर देंगे तो तुलसीदास बेचारा कहाँ जायेगा? यद्यपि मेरा मन हिम्मत हार गया है तब भी कृपया करके मेरा अपराध सुना दीजिये, जिसमें अपना दोष जान कर मैं आगे के लिये सावधान हो जाऊँ। ॥१६॥

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिरको कपि जे घर घाले।
तेरे निवाजे गरीब निवाज बिराजत बैरिन के उर साले॥

संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले।
बूढ़ भये, बलि, मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥१७॥

हे वानरराज! आपके बसाये हुए को शंकर भगवान भी नहीं उखाड़ सकते और जिस घर को आपने नष्ट कर दिया उसको कौन बसा सकता है? हे गरीब निवाज! आप जिस पर प्रसन्न रहते हो , वह शत्रुओं के हृदय में पीड़ा रूप होकर विराजता हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि, श्री हनुमान जी का नाम लेने से सम्पूर्ण संकट और सोच मकड़ी के जाले के समान नष्ट हो जाते हैं। हे बलिहारी! क्या आप मेरी ही बार बूढ़े हो गये हो ? अथवा बहुत-से गरीबों का पालन करते करते अब थक गये हो? अर्थात क्या कारण है की आप मेरा संकट दूर करने में विलम्ब कर रहे हो। ॥१७॥

सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंक से बंक मवा से।
तैं रनि-केहरि केहरि के बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से॥

तोसों समत्थ सुसाहेब सेई सहै तुलसी दुख दोष दवा से।
बानर बाज ! बढ़े खल-खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवा-से॥ १८॥

आपने समुद्र लाँघकर बड़े-बड़े दुष्ट राक्षसों का विनाश करके लंका जैसे विकट गढ़ को जला डाला। हे संग्राम-रुपी वन के सिंह आपने राक्षस शत्रुरुपी हाथी के बच्चों को सिंह की भाँति विनष्ट कर डाला। आप जैसे समर्थ और अच्छे स्वामी की सेवा करते हुए भी तुलसी दोष और दुःख की आग को सहन कर रहा है, यह आश्चर्य की बात है। हे वानर-रुपी बाज, बहुत से दुष्टजन रुपी पक्षी बढ़ गये हैं, उनको आप बटेर के समान क्यों नहीं पकड़ लेते। ॥१८॥

अच्छ-विमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो॥

राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीर-दुलारो। पाप-तें
साप-तें ताप तिहूँ-तें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो ॥१९॥

हे अक्षयकुमार को मारने वाले हनुमान् जी आपने अशोक-वाटिका का विध्वंस किया और रावण जैसे प्रतापी योद्धा के मुख के तेज की ओर तक नहीं देखा अर्थात् उसकी कुछ भी परवाह नहीं की। आप मेघनाद, अकम्पन और कुम्भकर्ण -जैसे हाथियों के मद को चूर्ण करने में तरुण सिंह के समान हुए। हे पवन के दुलारे पुत्र , पक्षरुप तिनकों के ढेर के लिये भगवान राम का प्रताप अग्नि तुल्य है और पवनकुमार उसको जलाने के लिये पवन-रुप हैं। वह पवननन्दन ही तुलसीदास को सर्वदा पाप, शाप और संताप – तीनों से रक्षा करने वाले हैं। ॥१९॥

घनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि बलि, बोल न बिसारिये।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये ॥

अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति,
मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये ॥२०॥

जिसको समस्त संसार जानता है, हे हनुमान् जी मैं बलि जाता हूँ, कृपया विचार कर अपनी प्रतिज्ञा को न भुलाइये। हे स्वामी कपिराज! तुलसीदस तो कभी आपकी सेवा के योग्य था ही नहीं ? न जाने कहाँ चूक हुई है। हे हनुमान, आप अपने स्वामी वाले स्वाभाव को संभालिये और यदि आप मुझे अपराधी समझते हों तो अनेकों दण्ड दीजिये, किन्तु जो लड्डू देने से मरता हो उसको विष से न मारिये। हे महाबली, साहसी, पवन के दुलारे, रघुनाथजी के प्यारे, मेरी भुजाओं की पीड़ा को अतिशीघ्र दूर कीजिये ॥२०॥

बालक बिलोकि, बलि बारेतें आपनो कियो,
दीनबन्धु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल,
आस रावरीयै दास रावरो बिचारिये ॥

बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलि को, निहारि सो निवारिये।
केसरी किसोर, रनरोर, बरजोर बीर,
बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये ॥२१॥

हे दीनबन्धु, मैं बलि जाता हूँ, बालक को देखकर आपने लड़कपन से ही अपनाया और मायारहित अनोखी दया की। सोचिये तो सही, तुलसी आपका दास है, इसको आपका भरोसा, आपका ही बल और आपसे ही आशा है। अत्यन्त भयानक कलिकाल ने किसको व्याकुल

नहीं किया? बलिहारी है आपकी, देखिये यह बलवान कलिकाल मेरे मस्तक पर अपना पैर रख रहा है, अब तो उसको हटाइये। हे केशरी किशोर, बरजोर वीर हनुमान, आप रण में कोलाहल उत्पन्न करने वाले हैं। जैसे आपने राहु की माता सिंहिका का वध किया था, उसी समान मेरी बाहु की पीड़ा को पछाड़कर मार डालिये ॥२१॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरी कुमार बल आपनो सँभारिये।
राम के गुलामनि को कामतरु रामदूत,
मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिये ॥

साहेब समर्थ तोसों तुलसी के माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि, बारिचर पीर,
मकरी ज्यौं पकरि कै बदन बिदारिये ॥२२॥

हे केशरीकुमार! आप उजड़े हुए सुग्रीव, विभीषण आदि को बसाने वाले और बसे हुए रावणादि को उजाड़ने वाले हैं, अपने उस बल का स्मरण कीजिये। हे रामदूत! रामचन्द्रजी के सेवकों के लिये आप कल्पवृक्ष हैंऔर मुझ जैसे दीन-दुर्बलों को आपका ही सहारा है। हे वीर! तुलसी के माथे पर आपके समान समर्थ स्वामी विद्यमान रहते हुए भी वह बाँधकर मारा जाता है। बलिहारी जाता हूँ, मेरी भुजा विशाल पोखरी के समान है और यह पीड़ा उसमें जलचर के सदृश

है, अत: जलचरी के समान इसको पकड़कर इसका मुख फाड़ डालिये ॥२२॥

राम को सनेह, राम साहस लखन सिय,
राम की भगति, सोच संकट निवारिये।
मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,
जीव-जामवंत को भरोसो तेरो भारिये॥

कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालू बैठि कै बिचारिये।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँह-पीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लात-घात ही मरोरि मारिये ॥२३॥

हे हनुमान, मेरा रामचन्द्रजी के प्रति स्नेह, रामचन्द्रजी की भक्ति, राम-लक्ष्मण और जानकीजी के प्रति अनुराग पर विचार कर मेरे शोक-संकट को दूर कीजिये। आनन्दरुपी बंदर रोग-रुपी अपार समुद्र को देखकर मन में हार गये हैं परन्तु जीवरुपी जामवंत को आपपर बड़ा भरोसा है। हे कृपालु तुलसी के सुन्दर प्रेमरुपी पर्वत से कूदिये, श्रेष्ठ स्थान हृदय रुपी सुबेल पर्वत पर बैठे हुए जीवरुपी जाम्बवन्त जी चिंता कर रहे हैं। हे बांके महाबली, जैसे आपने एक ही लात मे पीड़ारुपिणी लंकिनी को मार डाला था वैसे ही इस तुच्छ बाहुपीडा को मरोड़कर मार डालिए ॥२३॥

लोक-परलोकहुँ तिलोक न बिलोकियत,
तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये।
कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीवजाल,

नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥

खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये।
बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु-बेलि,
उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये ॥२४॥

मैं चारों ओर देखता हूँ परन्तु तीनो लोक, परलोक और तीनों काल में मुझे आपके समान योग्य कोई नहीं दिखायी देता। हे नाथ! कर्म, काल, लोकपाल तथा सम्पूर्ण स्थावर-जंगम जीवसमूह आपके ही हाथ में हैं, आप अपनी महिमा को विचारिये। हे देव! तुलसी आपका निजी सेवक है, उसके हृदय में आपका निवास है। ऐसे सेवक तुलसीदास का यह भारी दुःख अओसे कैसे देखा जाता है? बांहरुपी वृक्ष की जड़ में बाहू पीड़ा रुपी जो लता उपजी है, हे हनुमान ! इसे वानरी खेल से उखाड़ डालिये। ॥२४॥

करम-कराल-कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बकभगिनी काहू तें कहा डरैगी।
बड़ी बिकराल बाल घातिनी न जात कहि,
बाँहूबल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥

आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनी के पाले परैगी।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसी की,
बाँहपीर महाबीर तेरे मारे मरैगी ॥२५॥

भयंकर कर्मरुपी कंसराजा के बल पर, रोगरुपी बकासुर की बहन पूतना राक्षसी क्या किसी से डरेगी? इस अत्यंत भयावनी, बालकों को खाने वाली की दुष्टता कही नहीं जाती है, यह मेरे बाहुबल रुपी छोटे छोटे बालकों को छलेगी। हे हनुमान! आप ही विचारकर देखिये, वह सुन्दर रूप बनाकर आयी है, यदि आप जैसे गुणी के पाले पड़ेगी तभी सभी का दुःख दूर होगा। हे महाबली कपिराज तुलसी की बाहु की पीड़ा पूतना पिशाचिनी के समान है और आप बालकृष्ण-रुप हैं, यह आपके ही हाथों से मरेगी। ॥२५॥

भालकी कि कालकी कि रोष की त्रिदोष की है,
बेदन बिषम पाप ताप छल छाँह की।
करमन कूट की कि जन्त्र मन्त्र बूट की,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मन माँह की ॥

पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बाबरी न होहि बानि जानि कपि नाँह की।
आन हनुमान की दुहाई बलवान की,
सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँह की ॥२६॥

पता नहीं यह कठिन पीड़ा कपाल की लिखावट है या समय, क्रोध अथवा दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों प्रकार के ताप के कारण या मेरे भयंकर पापों का परिणाम है अथवा कपट की छाया है अथवा मारणादि प्रयोग अथवा यन्त्र-मन्त्र रुपी वृक्ष का फल है। जो भी हो, हे पापिनी तू मन की मैली मलिनता है, भाग जा, नहीं तो सजा पाएगी। मैं डंके की चोट से कहे देता हूँ कि श्री हनुमान का स्वभाव जानते

हुए भी पागलपन मत कर। महाबीर बलवान् हनुमान् जी की दुहाई और सौगन्ध है जो मेरे बाहुओं की पीड़ा रह जाए। ॥२६॥

सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।
लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार,
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है॥

तोरि जमकातरि मंदोदरी कढ़ोरि आनी,
रावन की रानी मेघनाद महँतारी है।
भीर बाँह पीर की निपट राखी महाबीर,
कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है ॥२७॥

मैं बलि जाता हूँ, सिंहिका के बल का संहार कर, सुरसा के छल को सुधार कर, आपने लंकिनी को मार गिराया और अशोक-वाटिका को उजाड़ डाला और लंकापुरी का विनाश कर किया। यमराज का खड्ग अर्थात् रावण के महल का फाटक तोड़ कर आप उस मंदोदरी को राजमहल से बाहर खींच लाए जो मेघनाद की माता और रावण की पटरानी थी। हे महाबली कपिराज! तुलसी को बड़ा सोच है की किसक संकोच में पड़कर आपने केवल मेरे बाहु की पीड़ा के भय को छोड़ रखा है। ॥२७॥

तेरो बालि केलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीर सुधि सक्र-रबि-राहु की।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहु की ॥

साम दान भेद बिधि बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथ ही के चोटी चोर साहु की।
आलस अनख परिहास कै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की ॥२८॥

हे वीर! आपके लड़कपन का खेल सुनकर धीरजवान् भी भयभीत हो जाते हैं और इन्द्र, सूर्य तथा राहु तक को अपने शरीर की सुधि नहीं रहती। आपके बाहुबाल से सभी लोकपाल शोकरहित होकर बसते हैं और आपका नाम लेने से किसी का दुःख नहीं रह जाता। साम, दान और भेद-नीति का विधान तथा वेद और लवेद की सिद्धियाँ सभी आप ही के प्रताप से सिद्ध हैं। साहूकार और चोर दोनों की लगाम आप ही के हाथ मे है। तुलसीदास को जो इतने दिन तक बाहु की पीड़ा रही है, वह क्या आपका आलस्य है अथवा क्रोध, परिहास या शिक्षा है। ॥२८॥

टूकनि को घर-घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है।
कीन्ही है सँभार सार अँजनी कुमार बीर,
आपनो बिसारि हैं न मेरेहू भरोसो है ॥

इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरी को मरन खेल बालकनि को सो है ॥२९॥

हे गरीबों के पालन करने वाले कृपानिधान, टुकड़ों के लिये दरिद्रतावश मैं घर-घर मैं डोलता-फिरता था, आपने बुलाकर बालक के समान मेरा पालन-पोषण किया है। हे वीर अंजनी कुमार हमेशा आपने ही मेरी रक्षा की है और आज आप अपने जन को भुला देंगे, इसकी मुझे आपसे उम्मीद नहीं है। हे कपिराज आप सभी प्रकार से समर्थ हैं, मैं सच कहता हूँ, आपके समान तीनों लोकों में भला कौन है? किंतु सेवक की दुर्दशा देखकर भी आप हंसी कर रहे हैं। लड़कों के खिलवाड़ होने के समान चिड़िया की मृत्यु हो रही है और आप तमाशा देख रहे हैं। ॥२९॥

आपने ही पाप तें त्रिपात तें कि साप तें,
बढ़ी है बाँह बेदन कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जन्त्र मन्त्र टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है ॥

करतार, भरतार, हरतार, कर्म काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो राम दूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीर तें पिराति है ॥३०॥

मेरे ही अपने पाप से अथवा तीनों ताप अथवा शाप से बाहु की पीड़ा ऐसे बढ़ी है कि वह न तो कही जाती और न ही सही जाती है। अनेक औषधि, यन्त्र, मन्त्र, टोटका आदि किये, देवताओं को मनाया, पर सब व्यर्थ हुआ, पीड़ा बढ़ती ही जाती है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कर्म, काल और संसार के इस जाल में कौन ऐसा है जो आपकी आज्ञा का पालन न करता हो। हे रामदूत तुलसी आपका दास है और आपने

इसको अपना सेवक कहा है। हे वीर आपकी यह ढिलाई मुझे इस पीड़ा से भी अधिक पीड़ित कर रही है। ॥३०॥

दूत राम राय को, सपूत पूत बाय को,
समत्व हाथ पाय को सहाय असहाय को।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिका के घाय को॥

एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन काय को।
थोरी बाँह पीर की बड़ी गलानि तुलसी को,
कौन पाप कोप, लोप प्रकट प्रभाय को ॥३१॥

आप राजा रामचन्द्र के दूत, पवनदेव के सुपुत्र, हाथ-पाँव के समर्थ, बलवान और निराश्रितों के सहायक हैं। आपके सुन्दर यश की कथा विख्यात है, वेद उसका गान करते हैं। रावण जैसा त्रिलोक-विजयी योद्धा आपके घूँसे की चोट से घायल हो गया। इतने शक्तिशाली स्वामी के अनुग्रह करने पर भी आपका श्रेष्ठ सेवक आज मन- वचन-कर्म से दुःख प्राप्त कर रहा है। तुलसीदास कहते हैं कि मुझे बाहु पीड़ा की तो थोड़ी सी ही ग्लानी है, अधिक सोच इस बात का है कि न जाने मेरे किस पाप के कारण वा क्रोध से आपका प्रत्यक्ष प्रभाव लुप्त हो गया है। ॥३१॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,

राम दूत की रजाइ माथे मानि लेत हैं।

घोर जन्त्र मन्त्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं।
क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं ॥३२॥

देवी, देवता, दैत्य, मनुष्य, मुनि, सिद्ध और नाग आदि छोटे-बड़े जितने जड़-चेतन जीव हैं तथा पूतना, पिशाचिनी, राक्षसी-राक्षस जितने कुटिल प्राणी हैं, वह सभी रामदूत पवनकुमार की आज्ञा शिरोधार्य करके मानते हैं। भीषण यन्त्र-मन्त्र, धोखाधडी, छलबाजी और दुष्ट रोगों के आक्रमण हनुमान् जी की दुहाई सुनकर स्थान छोड़ कर भाग जाते हैं। हे हनुमान, मेरे कर्म पर क्रोध कीजिये और तुलसी का प्रबोध कीजिए। उन ओशों को दूर कीजिए जो हमें दुःख देते हैं। ॥३२॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावन सों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घर के।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबर के ॥
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हर के।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसो कनिगर के ॥३३॥

आपके बल ने युद्ध में वानरों को रावण से जिताया और आपके ही नष्ट करने से राक्षस नष्ट हो गये। आपके ही बल से राजा रामचन्द्रजी ने देवताओं का सब कार्य पूर्ण किया और आपने ही रघुनाथजी के समाज का सम्पूर्ण साज सजाया। आपके गुणों का गान सुनकर देवता रोमांचित होते हैं और ब्रह्मा, विष्णु, महेश की आँखों में जल भर आता है। हे वानरों के स्वामी तुलसी के माथे पर हाथ फेरिये, आप जैसे अपनी मर्यादा की लाज रखने वालों के दास को कभी दुःखी नहीं होना चाहिए। ॥३३॥

पालो तेरे टूक को परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये।
भोरानाथ भोरे ही सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनी न अवडेरिये॥

अँबु तू हौं अँबुचर, अँबु तू हौं डिंभ सो न,
बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिये ॥३४॥

मैं आपके टुकड़ों से पला हूँ, चूक हो जाने पर भी मेरा त्याग न कीजिए। मैं कुमार्गी दो कौड़ी का हूँ, किसी काम का नहीं। परन्तु आप तो अपनी ओर देखिये, आप तो समर्थ हैं। हे भोलेनाथ, अपने भोलेपन के कारण आप थोडी से गलती से ही रुष्ट हो जाते हैं, सन्तुष्ट होकर मेरा पालन करके मुझे बसाइये, अपना सेवक समझकर दुर्दशा न कीजिये। आप जल हैं तो मैं मछली हूँ, आप माता हैं तो मैं छोटा बालक हूँ, यह जान कर देरी न कीजिये, मुझे आपका ही सहारा

है। बच्चे को व्याकुल जानकर रक्षा कीजिये, तुलसी की बाँह पर अपनी लम्बी पूँछ फेरिये जिससे पीड़ा निर्मूल हो जाए। ॥३४॥

घेरि लियो रोगनि, कुजोगनि, कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घन घटा धुकि धाई है।
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,
रोष बिनु दोष धूम-मूल मलिनाई है ॥

करुनानिधान हनुमान महा बलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजैं ते उड़ाई है।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरी किसोर राखे बीर बरिआई है ॥३५॥

मुझे रोगों, बुरे योगों और दुष्ट लोगों ने मुझे इस प्रकार घेर लिया है जैसे वर्षा ऋतु में घनघोर घटायें दिन के उजाले को घेर लेती हैं, यह सब निरपराध मुझ पर क्रोध कर रहे हैं। पीड़ा रुपी जल बरसाकर इन्होंने मेरे यशरुपी जवासे को अग्नि की तरह झुलसा कर मूर्च्छित कर दिया है। हे दया-निधान महाबलवान् हनुमान् जी आप हँसकर निहारिये और ललकार कर विपक्ष की सेना को अपनी फूँक से उड़ा दीजिये। तुलसी को कुरोग-रुपी निर्दय राक्षस ने लगभग खा ही लिया था, हे केशरी किशोर वीर, आपने बलपूर्वक मेरी रक्षा की है ॥३५॥

सवैया

राम गुलाम तु ही हनुमान
गोसाँई सुसाँई सदा अनुकूलो।
पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू पितु

मातु सों मंगल मोद समूलो ॥

बाँह की बेदन बाँह पगार
पुकारत आरत आनँद भूलो।
श्री रघुबीर निवारिये पीर रहौं
दरबार परो लटि लूलो ॥३६॥

हे हनुमान् जी आप जीवों को पालने वाले श्रेष्ठ स्वामी और सदा श्री रामचन्द्र जी के सेवकों के पक्ष में रहने वाले हैं। आनन्द-मंगल के मूल दोनों अक्षरों राम-राम ने माता-पिता के समान मेरा पालन किया है। हे दृढ बाहु वाले, बाजुओं की पीड़ा से दीन होकर, मैं सारा आनन्द भुलाकर दुःखी होकर आपको पुकार रहा हूँ। हे रघुकुल के वीर, मेरी पीड़ा को दूर कीजिये, जिससे दुर्बल और पंगु होकर भी श्री राम दरबार में पड़ा रहूँ। ॥३६॥

घनाक्षरी

काल की करालता करम कठिनाई कीधौं,
पाप के प्रभाव की सुभाय बाय बावरे।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीर डाबरे ॥

लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहुँ तावरे।
भूतनि की आपनी पराये की कृपा निधान,

जानियत सबही की रीति राम रावरे ॥३७॥

न जाने काल की भयानकता है कि कर्मों की कठिनता है, पाप का प्रभाव है अथवा स्वाभाविक बात की उन्मत्तता है। पर रात-दिन ऐसी बुरी पीड़ा हो रही है, जो सही नहीं जाती और उसी बाँह को पकड़े हुए है, जिसको पवनकुमार ने पकड़ा था। यह तुलसीरुपी वृक्ष आपका ही लगाया हुआ है जोकि तीनों तापों की ज्वाला से झुलसकर मुरझा गया है, इसकी ओर निहार कर कृपारुपी जल से सींचिये। हे दयानिधान रामचन्द्रजी आप भूतों की, अपनी और पराये की सबकी रीति जानते हैं, इसे दूर कीजिए। ॥३७॥

पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुँह पीर,
जरजर सकल पीर मई है।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहि पर दवरि दमानक सी दई है ॥

हौं तो बिनु मोल के बिकानो बलि बारेही तें,
ओट राम नाम की ललाट लिखि लई है।
कुँभज के किंकर बिकल बूढ़े गोखुरनि,
हाय राम राय ऐसी हाल कहूँ भई है ॥३८॥

पाँव की पीड़ा, पेट की पीड़ा, बाहु की पीड़ा और मुख की पीड़ा सहित सारा शरीर पीड़ामय होकर जीर्ण-शीर्ण हो गया है। देवता, प्रेत, पितर, कर्म, काल और दुष्टग्रह सबने एक साथ ही मुझपर तोपों की बाढ़ सी छोड़ दी है। बलि जाता हूँ। मैं तो लड़कपन से ही आपके हाथ बिना मोल बिका हुआ हूँ और अपने कपाल में रामनाम का

आधार लिख लिया है। हाय राजा रामचन्द्रजी मेरी ऐसी दशा हो रही है जैसे स्मौद्रपान करने वाले अगस्त्य मुनि का सेवक गाय के खुर बराबर जल में डूब गया हो। ॥३८॥

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,
मुँहपीर केतुजा कुरोग जातुधान हैं।
राम नाम जगजाप कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं ॥

सुमिरे सहाय राम लखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं।
तुलसी सँभारि ताड़का सँहारि भारि भट,
बेधे बरगद से बनाइ बानवान हैं ॥३९॥

बाहु की पीड़ा रूप नीच सुबाहु और देह का अशक्ति रुप मारीच राक्षस और ताड़कारुपिणी मुख की पीड़ा एवं अन्यान्य बुरे रोगरुप राक्षसों से मिले हुए हैं। मैं रामनाम का जपरुपी यज्ञ प्रेम के साथ करना चाहता हूँ, पर कालदूत के समान यह भूत मेरे वश के नहीं हैं। संसार में जिनकी कीर्ति प्रसिद्ध है वह (रा और म) दोनों अक्षर स्मरण करने पर मेरी सहायता करेंगे।दोनों ने ताड़का का वध किया और फिर शक्तिशाली योद्धाओं को अपने बाण का निशाना बनाकर बरगद के फल के समान भेद डाला। रामनाम ने अपने प्रताप से तुलसीदास के रोगरुपी राक्षसों का विनाश किया। ॥३९॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
राम नाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं।
परयो लोक-रीति में पुनीत प्रीति राम राय,

मोह बस बैठो तोरि तरकि तराक हौं ॥

खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अंजनी कुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं।
तुलसी गुसाँई भयो भोंडे दिन भूल गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं ॥४०॥

मैं बाल्यावस्था से ही सीधे मन से श्रीरामचन्द्रजी के सम्मुख हुआ, मुँह से राम नाम लेता टुकड़ा-टुकडा माँगकर खाता था। फिर युवावस्था में लोकरीति में पड़कर अज्ञानवश राजा रामचन्द्रजी के चरणों की पवित्र प्रीति को चटपट संसार में कूदकर उसे तोड़ बैठा। उस समय, खोटे आचरणों को करते हुए मुझे अंजनीकुमार ने अपनाया और रामचन्द्रजी के पुनीत हाथों मुझे पवित्र किया तो मैं मात्र तुलसी से गोस्वामी बन गया और अभिमानवश अपने बुरे दिन भूल गया, जिसका फल आज अच्छी तरह पा रहा हूँ। ॥४०॥

असन-बसन-हीन बिषम-बिषाद-लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सील सिंधु आपने सुभाय को॥

नीच यहि बीच पति पाइ भरु हाईगो,
बिहाइ प्रभु भजन बचन मन काय को।
ता तें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि फूटि निकसत लोन राम राय को ॥४१॥

मुझे भोजन-वस्त्र से रहित, भयंकर विषाद में डूबा हुआ और दीन-दुर्बल को देखकर ऐसा कौन था जो हाय-हाय नहीं करता था? ऐसे अनाथ तुलसी को दयासागर स्वामी रघुनाथजी ने सनाथ करके अपने स्वभाव से उत्तम फल दिया। इस बीच में यह नीच जन प्रतिष्ठा पाकर फूल उठा और मन-कर्म-वचन से राम जी का भजन छोड़ कर शरीर को पुष्ट करने लगा, इसी से शरीर में से भयंकर बालतोड़ के बहाने रामचन्द्रजी का नमक फूट-फूटकर निकलता दिखायी दे रहा है। ॥४१॥

जीओं जग जानकी जीवन को कहाइ जन,
मरिबे को बारानसी बारि सुरसरि को।
तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक हैं ऐसे ठाँउ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरि को ॥

मोको झूटो साँचो लोग राम को कहत सब,
मेरे मन मान है न हर को न हरि को।
भारी पीर दुसह सरीर तें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को ॥४२॥

संसार में जीवित रहना है तो जानकी जीवन रामचन्द्रजी का दास कहलाकर संसार में जीवित रहूँ और मरने के लिये काशी तथा गंगाजल है ही। ऐसे स्थान में, जीवन-मरण से, तुलसी के दोनों हाथों में लड्डू है, जिसके जीने-मरने से लड़के भी सोच न करेंगे। सब लोग मुझको झूठा-सच्चा राम का ही दास कहते हैं और मेरे मन में भी इस बात का गर्व है कि मैं रामचन्द्रजी को छोड़कर न शिव का भक्त हूँ, न विष्णु का। शरीर की भारी पीड़ा से विकल हो रहा हूँ, उसको बिना श्री राम जी के कौन दूर कर सकता है। ॥४२॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेश को महेस मानो गुरु कै।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुर कै॥

ब्याधि भूत जनित उपाधि काहु खल की,
समाधि कीजे तुलसी को जानि जन फुर कै।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोग सिंधु क्यों न डारियत गाय खुर कै ॥४३॥

श्री राम मेरे स्वामी हैं, हनुमान् जी नित्य ही सहायक हैं और हितोपदेश के लिये महेश मानो गुरु ही हैं। मुझे तो तन, मन, वचन से आपके चरणों की ही शरण है। आपके भरोसे मैंने देवताओं को देवता नहीं माना। रोग व प्रेत द्वारा उत्पन्न अथवा किसी दुष्ट के उपद्रव से हुई पीड़ा को दूर करके तुलसी को अपना सच्चा सेवक जानकर इसकी शान्ति कीजिये। हे कपिनाथ, हे रघुनाथ, हे भोलानाथ, हे भूतनाथ रक्षा कीजिए, रोगरुपी महासागर को गाय के खुर के समान क्यों नहीं कर डालते। ॥४३॥

कहों हनुमान सों सुजान राम राय सों,
कृपानिधान संकर सों सावधान सुनिये।
हरष विषाद राग रोष गुन दोष मई,
बिरची बिरंची सब देखियत दुनिये॥
माया जीव काल के करम के सुभाय के,
करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये।

तुम्ह तें कहा न होय हा हा सो बुझैये मोहि,
हौं हूँ रहों मौनही बयो सो जानि लुनिये ॥४४॥

मैं हनुमान् जी से, सुजान राजा राम से और कृपानिधान शंकरजी से कहता हूँ, उसे सावधान होकर सुनिये। देखा जाता है कि विधाता ने सारी दुनिया को हर्ष, विषाद, राग, रोष, गुण और दोषमय बनाया है। वेद कहते हैं कि माया, जीव, काल, कर्म और स्वभाव के करने वाले रामचन्द्रजी हैं। इस बात को मैंने चित्त में सत्य माना है। हे राम! मैं विनती करता हूँ, मुझे यह समझा दीजिये कि आपसे क्या नहीं हो सकता। फिर मैं भी यह जानकर चुप रहूँगा कि जो बोया है, उसी का फल पाता हूँ ॥४४॥

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

॥ श्री हनुमान बाहुक समात ॥